भारत के ७३वे स्वतंत्रता दिवस पर राजभवन गांधीनगर में आयोजित एट होम कार्यक्रम मे गुजरात के माननीय राज्यपालश्री आचार्य देवव्रत जी का संबोधन। (15.08.2019)

- आज राजभवन में 73वें स्वतंत्रता दिवस पर में आप सभी का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ तथा स्वागत करता हूँ। आज का यह दिन अपने साथ एक और पर्व भी ले आया है जो भाई-बहन के पवित्र संबंध रक्षाबंधन का पर्व है। इसकी भी में आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

- 12 अगस्त 2015 को मैंने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में शपथ ली थी। ठीक तीन दिन बाद 15 अगस्त आई थी और वहाँ के राजभवन के अधिकारियोंने मुझे सूचना दी थी कि 15 अगस्त को राजभवन में At-Home कार्यक्रम होता है। उससे पहले में कभी भी किसी भी At-Home कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हुआ था। 15 अगस्त आया और At-Home कार्यक्रम संपन्न हुआ। वहाँ भी आपकी तरह प्रतिष्ठित भाई-बहन प्रदेश भर से आमंत्रित किए गये थे। अरस-परस आपस में "नमस्ते" हुआ, जलपान हुआ और सभी अपने घरो को चले गये। तब मेंने अपने अधिकारियों को पूछा कि At-Home कब होगा। उन्होंने कहां जी, "At-Home तो संपन्न हो गया।" मैंने सोचा क्या यही At-Home था जिसके लिए मेरे मन मे इतनी बड़ी उत्सुकता थी। मेंने यह भी सोचा कि At-Home में जिनको जलपान दिया

गया और जो लोग आए थे वो तो बड़े समृद्ध लोग थें। उनके घर जलपान की कोई कमी नहीं है। राजभवन में आपस में मिलकर हम चाय पी सकते थे। उसके लिए लाखो रुपया खर्च करने की जरूरत नहीं थी।

- भाइयों और बहनों। At-Home की समाप्ति के बाद मेंने यह चिंतन किया कि At-Home की प्रथा शुरू कहां से हुई है तो जानकारी मिली कि अंग्रेज़ सरकार के समय से राजभवनों में At-Home कार्यक्रम चला आ रहा है। उस समय के गवर्नर अपने गुप्तचरों को आमंत्रित करते थे, पक्ष-विपक्ष में रहे लोगों की गतिविधियां की जानकारी उनसे लेते थे और उन्हें चाय पिलाकर विदा कर देते थे। आज तो ऐसा है नहीं। तभी से मैंने निर्णय लिया की 15 अगस्त तो चला गया। लेकिन अब गणतंत्र दिवस आयेगा तब हम इस कार्यक्रम का स्वरूप जरूर बदल देंगे।

- क्या हमारा नैतिक कर्तव्य नहीं बनता कि जिन लोगों की बदौलत मैं और आप आजाद हुये तथा जिन क्रांतिकारी वीरोंने भरी जवानी में अपनी जिंदगीओं को देश के लिए समर्पित कर दिया उनको हम याद भी न करें। 1857 से क्रांति से लेकर 1947 तक कितने लोगोंने इस देश के लिये अपने आप को न्यौछावर कर दिया था। स्वतंत्रता दिवस पर हम यदि उन्हें श्रद्धापूर्वक याद न करे, उनका नाम भी न ले तो At-Home किस काम का ?

- भाइयों और बहनों। आप सभी प्रबुद्धजन है। भारत देश की स्वतंत्रता के लिए हमें हमारे इतिहास के उन पन्नों को उलट कर भी देखना चाहिए। हमारे यहाँ ऐसे-ऐसे कई क्रांतिकारी हो गये है जिन्होंने अपने जीवन में कोई सुख नहीं देखा। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल अपनी माँ का एक लौटा बेटा था। भरी जवानी में आजादी के आंदोलन में सक्रिय भाग लेता था। कांकोरी कांड में, देश भक्ति के अपराध में, अंग्रेजो ने उसे गोरखपुर की जेल में बंदी किया था। अपनी फांसी के पूर्व 18 दिन पहले काल-कोटरी में बंद रामप्रसाद बिस्मिल अपनी आत्मकथा में लिखता था कि जिस काल कोटरी में अंग्रेजों ने उसे बंद किया है, उसकी ऊंचाई इतनी कम है कि वह सीधा खड़ा रह नहीं सकता, इसकी लंबाई इतनी छोटी है कि वह पैर सीधे कर के सो भी नहीं सकता। पीने के पानी के लिए एक मटका तथा दूसरा मटका शौच के लिए रखा था। दिन में सूर्य के प्रखर ताप से वह आँख बांध कर के सो नहीं सकता था तो रात को मच्छर उसे सोने नहीं देते थे। इसी काल कोटरी में वह प्रतीक्षा करता था कि कब वो दिन आयेगा जब अंग्रेज़ उसे फांसी पर लटकायेंगे और वह पुन: जन्म लेकर दोबारा भारत माँ के काम आयेगा।
- भाईयों और बहनों। क्या आज के दिन रामप्रसाद बिस्मिल जैसे शहीदों को स्मरण नहीं करना चाहिए ? अंग्रेज़ जेलर एक दिन उसके पास आया और उसे कहाँ कि कल सुबह 7 बजे तुम्हें फांसी दी जाएगी। रामप्रसाद बिस्मिल

की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अंग्रेज़ इतने डरते थे कि पैरो में बेड़िया बांधकर बिस्मिल को फांसी के तक्ते की तरफ ले जाने लगे। बिस्मिल बहुत बड़ा शायर था। जब उसे अंग्रेज़ फांसी की तरफ ले जा रहे थे तब वह हसता हुआ, गुन-गुनाता हुआ, मस्ती में गाता-गाता जा रहा था। जेल के अधिकारियोंने तथा उसे देखनेवालों ने लोगों ने कहा वह तो पागल हो गया है। फिर भी उसने किसी की परवाह नहीं की। भाइयों और बहनों। आज तक के इतिहास को पढ़कर के आप देखियेगा समजदार लोग कभी भी देश के काम नहीं आते। पागल और दीवाने लोग ही इस रास्ते का चयन करते है। भारत माता की जय बोलता हुआ, फांसी की बेड़ियों को गले लगाता हुआ, रामप्रसाद बिस्मिल इसी आशा के साथ फांसी की बेड़ी पर चढ़ गया कि वह दूसरा जन्म लेगा और फिर देश के काम आयेगा।

- यह चिंतन, यह विचार, हमारे हजारों क्रांतिकारियों के थें। जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया। सरदार भगतसिंह के परिवार की तीन-तीन पीढ़ियाँ देश के काम में आई।
- लोक मान्य तिलक देश भक्ति के अपराध में मांडला की केद में बंदी थे। वहाँ बैठे-बैठे श्रीमद् भगवत गीता का भाष्य वे लिख रहे थे। एक दिन अंग्रेज़ जेलर उनके पास एक टेलीग्राम लेकर आया जिसमें लोक मान्य तिलक की पत्नी के निधन के समाचार छपे हुये थे। अंग्रेज़ जेलर ने स्वयं उस तार को पढ़ा

और जा कर लोक मान्य तिलक को सोंप दिया। तिलक ने भी वह तार पढ़ा और तार बंद करके फिर से श्रीमद् भगवत गीता का भाष्य लिखने का शुरू किया। जब अंग्रेज़ जेलरने यह देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। वो तिलक के पास गया और उसने पूछा "Mr. Tilak ये टेलिग्राम में तो आपके पत्नी का निधन के समाचार छुपे हुए है। आप यहाँ अपने वतन से कई मिलो दूर मांडला की इस केद में बंदी हो और आपकी धर्म-पत्नी सदा के लिए दुनिया छोड़कर चली गई है, उनकी मौत पर आपकी आँख में एक आँसु भी नहीं है। लगता है आपके सीने में दिल नहीं परंतु पत्थर है।" अंग्रेज़ जेलर की यह बात सूनकर लोक मान्य तिलक थोड़ी देर चूप रहे और उसके बाद उन्होंने जेलर को कहा कि जबसे उन्होंने होंस संभाला है, और अज्ञान में तड़पती मानवना और गुलामी की झंझिरों में तड़पती भारतमाता को देख-देखकर उन्होंने इतने आँसू बहाये है कि आज उनकी पत्नी की मौत के अवसर पर रोने के लिए उनके पास एक आँसू भी नहीं है। अंग्रेज़ जेलर इस उत्तर को सूनकर दंग रह गया और उसने कहा कि भारत कोई गुलाम नहीं रख सकता। हमारे देश में ऐसे कई नवरत्न पैदा हुए है जो अपनों के लिए नहीं औरों के लिए जीते है और अपनों के नहीं परंतु औरों के लिए रोते है ।

- भाइयों और बहनों। कैसे-कैसे लोग थे ये ? ऐसी कुछ घटनाएं नहीं, पुरा इतिहास भरा पड़ा है। आज के इस स्वतंत्रता दिवस पर में आप सब की और

से तथा अपनी ओर से उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करता हूँ जिनकी बदौलत आज भारत स्वतन्त्र है। आज हम आजाद है। हमारा अपना संविधान है। हमारी व्यवस्थाएं है और हम विकास की दिशा में आगे बढ़ रहे है।

- यह हम सभी का सौभाग्य है कि भारत को आजादी मिली, जब हम आजाद हुये, भारत देश खंड-खंड में बटा हुआ था। कई राजे-रजवाड़े थे। मैं गुजरात की इस धरती को नमन करता हूँ जिसने सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे महान नेताओं को जन्म दिया। उन्होंने इस देश की सभी रियासतों को एकत्रित करके भारत की विशालता को अखंडित बनाने के लिए काम किया। आप सभी काश्मीर के बारे में सोचते थे, चिंता करते थे। यह काम आज हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने भी कर दिखाया और काश्मीर का हिस्सा भारत का अभिन्न अंग हुआ। आज चहुंमुखी विकास करता हुआ, प्रगति के सोपान की तरफ आगे कूच करता हुआ भारत अपनी ख्याति को पूरे विश्व में फैला रहा है। यह हम सबके लिए बड़े गौरव की बात है।
- गुजरात प्रदेश सरकार के माननीय मुख्यमंत्री श्री रुपाणी जी आज यहाँ उपस्थित है। उनके कुशल नेतृत्व में गुजरात में कई लोक-कल्याणकारी योजनाएं बनती है और कार्यान्वित हो रही है यह हम सभी के लिए गौरव की बात है।

- हिमाचल प्रदेश में जब में राज्यपाल था तो वहाँ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, स्वच्छता अभियान, जलसंचय, समरसता, नशा मुक्ति तथा प्राकृतिक कृषि इत्यादि कार्यक्रमों को में चलाता रहता था। यहाँ गुजरात में भी इसी प्रकार के कार्यक्रमों को चलाने की मेरी इच्छा है और इसके बारे मैंने माननीय मुख्यमंत्रीजी से चर्चाएं भी की है। उन्होंने भी मुझे पुरा सहयोग देने का वादा किया है।

- भाइयों और बहनों। प्राकृतिक कृषि पद्धति एक ऐसी कृषि पद्धति है, जिसे अपनाने से धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी और आनेवाली पीढ़ियों को उपजाऊ जमीन मिलेगी। इस पद्धति में पर्यावरण की पूर्ण रक्षा होगी तथा पानी की बचत होगी। प्राकृतिक कृषि पद्धति का मैंने गुरुकुल, कुरुक्षेत्र में स्वयं प्रयोग किया है। इसमें उत्पादन घटता नहीं और लागत शून्य हो जाती है। हमारे यशस्वी माननीय प्रधानमंत्री ने सन् 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का संकल्प लिया है और इस मिशन को फलीभूत करने के लिए प्राकृतिक कृषि पद्धति एक मात्र विकल्प है।

- आओ, हम सब मिलकर प्रदेश सरकार की लोक-कल्याणकारी कार्यक्रमों में सहयोगी बनकर आगे बढ़ाये और हमारे क्रांतिकारीयोंने देश को आजाद करते वक्त जो स्वप्न देखे थे वो सभी पूरे हो, देश की उन्नति हो और देश का विकास हो। इसके लिए हम एकता के भाव से हम सब भारतीय है और इस

देश के नागरिक है इसी सोच के साथ आगे बढ़े। आज के इस At-Home कार्यक्रम पर मैं पुन: आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की तथा रक्षाबंधन पर्व की बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। में कामना करता हूँ कि आप सब सुखी हो, निरोगी हो और आनंदित हो। हम सभी मिलकर इस प्रदेश को और इस देश को आगे बढ़ाते रहे इन्हीं शब्दों के साथ में अपनी बात को समाप्त करता हूँ। जय हिन्द।